Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

संगीत में विसंगतियां

— डॉ. परमजीत कौर, संगीत विभाग,

सारांश

कहते हैं कला, कला के लिए नहीं, जीवन के लिए है जबकि मानव जीवन विसंगतियों तथा विषमताओं से अविष्टित है तो फिर कला क्षेत्र भी इन विसंगतियों से कैसे अछूता रह सकता है? प्रश्न उठता है यह विसंगति है क्या? जहां तक विसंगति का कोशगत अर्थ है — वह है अनुपयुक्तता, अनौचित्य तथा असंगति। बेमेलपन तथा असमानता भी विसंगति के पर्याय है। डॉ. ..... गर्ग के अनुसार ''विसंगति औचित्य पर अनौचित्य के प्रभावी होने, समता के मार्ग पर विषमता द्वारा रोड़ा अटकाए जाने अथवा सिलसिलेपन में बेसिलसिलेपन के प्रवेश से जन्म लेती है।'' अर्थात् जहां कथनी–करनी में अन्तर हो, दोगलापन हो, वहीं विसंगति का प्रवेश हो जाता है। इन विसंगतियों के निःसन्देह कई आयाम हैं, परन्तु हम कला क्षेत्र से सम्बन्धित और वह भी मात्र संगीत क्षेत्र में विसंगतियों की चर्चा करेंगे। सांगीतिक क्षेत्र में विसंगतियों का स्वरूप जो अधिकतर परिलक्षित है, वह है क्रियात्मक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक तथा वैयक्तिक।

क्रियात्मक संगीत में विसंगतियां :

संगीत के तीनों अंग गायन, वादन एवं नृत्य में उचित शिक्षण के अभाव में इस प्रकार की विसंगतियां उत्पन्न होती हैं। गायन में दोष गायक के आवाज़ निकालने और लगाने के ढंग, आलापचारी के ढंग, गीत की बंदिश और उसकी भरावट, तान, बोलतान तथा उपज एवं रागों के चुनाव में हो सकते हैं। बेसुरा एवं बेताला होना संगीत में बहुत बड़ी विसंगति है क्योंकि संगीत का विशेष ज्ञान न रखने वाला श्रोता भी इसकी पहचान आसानी से कर लेता है। मुख मुद्रा दोष एवं उच्चारणगत दोष की चर्चा शास्त्रीय संगीत में अक्सर की जाती है। विगत में कलाकारों की निरक्षरता एवं कुछ हद तक घराना परम्परा भी इसके लिए उत्तारदायी है।

सांस्कृतिक विसंगतियां :

आधुनिकता के नाम पर बाह्य संस्कृति का देशी संस्कृति में मिश्रण इस प्रकार की विसंगतियों को जन्म देता है। उदाहरणतः पॉप संगीत, लोक संगीत वीडियो में इलैक्ट्रोनिक वाद्य एवं अश्लील परिधान, पाश्चात्य वाद्य–यन्त्रों का भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रवेश — सनातनी भजनों में फिल्मी तथा विदेशी धुनों का प्रवेश आदि ऐसे तत्त्व हैं जो संगीत तथा भक्ति दोनों का मनोरथ धूमिल कर देते हैं।

फयूजन संगीत तथा रिमिक्स ऑडियो–वीडियो से न केवल सुरीलापन कम होता है बल्कि अनुचित प्रकार के सांगीतिक आचरण का आभास होता है। वाद्य संगीत के नाम पर हमारे

एसो. प्रो., संगीत विभाग, एस.डी. महाविद्यालय (लाहौर), अम्बाला कैंट

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

शास्त्रीय वाद्यों में पश्चिम वाद्यों की संगति कोलाहल का पर्याय बन जाती है जिससे आनन्द की अनुभूमि की अपेक्षा हार्दिक क्षोभ व मानसिक तनाव उत्पन्न होता है।

ऐतिहासिक विसंगतियां :

ऐसी बहुत–सी घटनाएं हैं जिनका सम्बन्ध ऐतिहासिक कालक्रम से न होते हुए भी उनका श्रेय किसी संगीतज्ञ विशेष को अनावश्यक रूप से दे दिया जाता है। इस प्रकार की विसंगतियों के लिए तत्कालीन महान् व्यक्तित्व एवं उस समय की परिस्थितियों को प्रमाण के रूप में मान लिया जाता है। उदाहरणतः तबले की उत्पत्ति की बात हो या रबाब की – इनका श्रेय अमीर खुसरो को दे दिया जाता है जबकि ऐतिहासिक तथ्य इसके विपरीत हैं। दूसरी विसंगति है प्राचीनता को लेकर संगीत में किसी भी वस्तु को प्राचीनता के साथ जोड़ने में जो मलाल भारतीय संगीतज्ञों को होता है ऐसा अन्यत्र दिखाई नहीं देता। स्वरलिपि चाहे कुछ समय पूर्व स्वयं बनाई हो लेकिन कलाकार उसके साथ न जाने क्यों स्वामी हरिदास, तानसेन, अदारंग–सदारंग इत्यादि का नाम जोड़कर बताने में गौरवान्वित होता है। इसी प्रकार संगीत से सम्बन्धित लोग अपने–आप को किसी न किसी प्रसिद्ध घराने का शिष्य मानने में फ़क्र महसूस करते हैं, सच्चाई चाहे इसके विपरीत हो।

ऐसी विसंगतियों के पीछे यह धारणा कार्य करती है कि प्राचीन भारतीय संगीत मोक्ष का द्वार था तथा बहुत–से चमत्कार कर सकने में सक्षम था परन्तु वर्तमान संगीत में भौतिकता के अंश बढ़ने से यह लक्ष्यहीन हो गया है।

आर्थिक विसंगतियां :

इस प्रकार की विसंगतियां आर्थिक न्याय के अभाव तथा धन की लोलुपता से पैदा होती है। जब से संगीत के क्षेत्र में व्यापारिक प्रवृत्ति प्रबल हुई है, संगीत के नाम पर 'नैतिक–अनैतिक' की चिन्ता किए बिना मार्किट में सब कुछ बिक रहा है। बड़े–बड़े पूंजीपति कुछ तथाकथित जाने–माने कलाकारों को मुंह–मांगी रकम देकर वह सब कुछ बाज़ार में झोंक देते हैं जो सुनने की दृष्टि से भी कतई स्वस्थ नहीं है। ऐसे में श्रोताओं के पास विकल्प के अभाव में उन्हें इसी प्रकार के संगीत पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

दुनिया को मायाजाल से मुक्ति दिलवाने वाले, भक्ति संगीत के ऐसे महान् कलाकार भी हैं जो दैवी संगीत की झंकार लगाने का दम तो भरते हैं, परन्तु चंद रूपयों की खातिर मंच त्यागने में थोड़ा भी नहीं हिचकिचाते। दूसरी ओर कलाकारों का शोषण, उचित मेहनताना न मिलना, बुढ़ापे में पुनर्वास सम्बन्धित कठिनाइयों इत्यादि से भी असंगतियां पनपती हैं जिनके विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले मंच का भी सर्वथा अभाव है।

वैयक्तिक विसंगतियां :

संगीत में ऐसे बहुत कम लोग होंगे जो निजी अनौचित्य तथा अपने दोषों पर प्रहार करके लिखते हो। इसके विपरीत वे आत्म प्रशंसा के पुल बांधते ही दिखाई पड़ते हैं। अधिकतर तो अपने

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

संगीत को मौलिक या बहुत बड़े उस्ताद के साथ जोड़ने में गर्व महसूस करते हैं। कुछ लोग तो पुराने रागों पर अपना नाम थोपकर अपने–आप को रागों का आविष्कारक घोषित करते हैं। पुराने संगीतज्ञों के बारे में विडम्बना यह भी थी कि सांगीतिक ज्ञान का जो भण्डार उनके पास होता था, वह उसे अपने साथियों में बांटने की बजाए अपने साथ लेकर ही इस दुनिया से विदा होते गए।

परस्थ विसंगतियां अर्थात् दूसरों में विसंगतियां ढूंढना था आक्षेप लगाना निःसन्देह आसान कार्य है। यदि सुधार लाने की दृष्टि से निःस्वार्थ आलोचना की जाती है तो यह सिर्फ उस व्यक्ति के लिए ही उपयोगी नहीं बल्कि समाजोपयोगी भी होती है, ऐसे में इससे ईर्ष्या या द्वेष नहीं होना चाहिए। संगीतज्ञों में परस्थ विसंगतियों पर वही लक्ष्य प्राप्त हो सकता है जो स्वयं संगीत विषय में पारंगत हो। फिर भी ऐसी आलोचना व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर होनी चाहिए।

प्रश्न उठता है – इन विसंगतियों में सुधार कैसे संभव हो? – विसंगतियों का आयाम चाहे कोई भी हो, परन्तु उसमें सुधार का माध्यम है समालोचना – यानि ऐसी आलोचना जिसमें सुधार दृष्टिकोण का भाव निहित हो। इसी प्रकार हास्य अथवा व्यंग्य भी एक स्वरूप है ऐसी समालोचना का। व्यंग्यकार, विसंगतियों से प्रेरित हो अपनी कृति से कोमल प्रहार कर, रचनाकार की रचना के अपेक्षित सत्य को उत्घाटित करता है। यद्यपि संगीत में व्यंग्य एक विशिष्ट प्रयोग लगता है, परन्तु समय आ गया है कि अब संगीत का अध्ययन इस पहलू से भी हो।

संगीत पुस्तकों में उपलब्ध 'कार्टून' आदि से ऐसी अभिव्यक्ति पर्याप्त नहीं। मेरे विचार से संगीत की दुनिया में व्याप्त विसंगतियों को संगीत पत्रकारिता के साथ जोड़कर अध्ययन करना चाहिए। आशा की जाती है कि संगीत मासिक पत्रिका में 'संगीत–व्यंग्य' के नाम से एक स्थाई स्तम्भ का शुभारम्भ हो।

पुस्तक संदर्भ सूची–

भारतीय नाट्यशास्त्र, 2001, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।

भारतीय शास्त्रीय संगीत, 1980, परिमल, पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़